International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 24-02-2022, Accepted: 11-03-2022, Published: 26-03-2022
Volume 8, Issue 2, 2022, Page No. 40-42

सैयद गुलाम नबी 'रसलीन' नायक–नायिका भेद

ताबिन्दा रिजवी
प्राचार्य, एस.बी.एम.पी.जी. कॉलेज सिरसी, सम्भल, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
सैयद गुलाम नब 'रसलीन' रीतिकाल के महत्वपूर्ण कवि हैं। इन्होंने 'रसप्रबोध' एवं 'अंगवर्णन' नामक ग्रन्थों की रचना की है। 'रसप्रबोध' ग्रन्थ में इन्होंने रस एवं नायक–नायिका भेद पर प्रभावशली रूप से लिखा है। इनका नायक – नायिका भेद रीतिकाल से प्रेरित है परन्तु उसमें मौलिकता का समावेष है एवं अश्लीलता के दर्शन भी नहीं होते।

मूल शब्दः नायक भेदः पति, उपपति, वैषिक, नायिका भेदः स्वकीया, परकीया, सामान्या

प्रस्तावना
हिन्दी काव्यशास्त्र में नायक–नायिका भेद का प्रमुख स्थान है। नायक–नायिका भेद की परम्परा नाट्यशास्त्र से ही मूल रूप में प्राप्त होती है और नाट्यशास्त्र ने इसे काव्यशास्त्र से ग्रहण किया है। नाट्यशास्त्र में इस विषय को लाने का भरतमुनि का उद्देश्य यही था कि कवि और पाठकों को नारी मनोविज्ञान को समझाया जा सके कि किस प्रकार की स्त्री क्या सोच सकती है, कैसी बात कर सकती है।
हिन्दी साहित्य में इस विधा को आरंभ करने का श्रेय भक्त–कवि कृपाराम को पहुंचता है, जिन्होंने, सम्वत् 1598 में नायिका भेद पर 'हिततरंगिणी' की रचना की। सूरदास ने 'साहित्यलहरी' में इस प्रकरण पर कुछ पद रचे। इस परम्परा का निर्वाह करते हुए रहीम ने 'बरवै नायिका भेद, लिखा।
'रसलीन' एक ऐसे ही आचार्य कवि है, जिन्होंने अपने ग्रन्थ 'रसप्रबोध' में रस एवं नायक–नायिका भेद का विवेचन किया है। इनके फुटकल कवित्त और स्फुट दोहों में भी नायक–नायिका भेद की पर्याप्त सामग्री मिलती है।

नायक
साहित्य में नायक का महत्वपूर्ण स्थान है। नायक कथा या प्रसंग में सर्वत्र व्याप्त रहने वाला प्रधान मार्गदर्शक होता है तथा कथासूत्र को फलागम की ओर ले जाता है। काव्य या नाटक में प्रधान पुरूष पात्र नायक कहलाता है।

नायक–भेद
नायक श्रृंगार–रस का दूसरा आलंबन है। नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र तथा कामशास्त्रीय ग्रन्थों में इसका विस्तार से वर्णन हुआ है। 'रसलीन' ने नायक के तीन भेद किए है –
1. पति
2. उपपति
3. वैषिक

सुकिया परकीया पतिहि, पति उपपति है नाम।
सामान्या मित्रहि कहैं, बैसुक कवि अभिराम।।

–रसप्रबोध, छन्द–518

पति
आचार्यकवियों ने विवाहिता, पत्नी से ही प्रीति रखने वाले नायक को पति कहा है। 'रसलीन' ने स्वकीया से सम्बन्ध रखने वाले नायक को पति कहा है।

उपपति
किसी अन्य स्त्री से सम्बन्ध रखने वाले को उपपति कहा गया है। 'रसलीन' ने परकीया के पति को उपपति की संज्ञा दी है। 'रसलीन' ने उपपति के अत्यन्त सुन्दर उदाहरण दिए है –

यह विचित्र तिय की कथा, कहिये काहि सुनाइ।
मे घट आगि लगाय कै, घट लै जल को जाइ।।

–रसप्रबोध, छन्द–535

वैशिक

वैश्या के साथ सम्बन्ध रखने वाला पुरुष वैशिक कहलाता है। 'रसलीन' ने सामान्या के मित्र को वैशिक कहा है।
इसके अतिरिक्त 'रसलीन' ने प्रकृति गुण के अनुसार, स्वभाव के अनुसार रस की दृष्टि से, लोकभेद के अनुसार नायक के अनेक भेद किए है।

नायिका

नायिका काव्य या नाटक की प्रधानपात्री है, जो कि नायक की सहधार्मिणी होकर अभीष्ट को फलागम की ओर ले जाती है। साधारण रूप से नायक की पत्नी या प्रेमिका को नायिका कहा जाता है, परन्तु पाश्चात्य साहित्य में नायिका को नायक की पत्नी या प्रेमिका होना जरूरी नहीं है, वहां प्रधानपात्रा ही नायिका मानी जाती है। भारतीय काव्यशास्त्र नायक की पत्नी या प्रेमिका को ही नायिका मानता है।
'रसलीन' ने नायिका का लक्षण देते हुए कहा है कि जिस नारी को देखने से ही नर के हृदय में प्रीति उपजती है और जो रसरीति का ज्ञान रखती है, वही नायिका है –

निरखत ही जिहि नारि के, नर हिय उपजै प्रीति।
ताहि कहत है नायिका, जो जानत रसरीति।।

–रसप्रबोध, छन्द–74

नायिका–भेद

नायिका भेद का विकास हमें संस्कृत वाड़मय के नाट्यशास्त्र एवं कामशास्त्र से ही उपलब्ध होता है। नाट्यशास्त्र में अभिनय की सुविधा के लिए नायिकाभेद किया गया। रीतिकालीन आचार्यों का नायिकाभेद 'रसमंजरी' पर आधारित है, इस कारण इसका महत्व अधिक बढ़ गया है। रसलीन ने भी भरतमुनि एवं भानुदत्त आदि संस्कृत आचार्यों के ग्रन्थों को आधार बनाकर नायिका–भेद किया है, इसके अतिरिक्त इनके कुछ मौलिक भेद भी है। 'रसलीन' कृत नायिका भेद को संक्षिप्त में निम्न प्रकार समझा जा सकता है –

1. **स्वकीयाः** स्वाकीया में पूर्ण नायिका के गुण विद्यमान होते है। यह कभी पर, पुरुष को नहीं देखती। 'रसलीन'ने पति से प्रेम करने वाली लज्जावती नायिका को स्वकीया कहा है –

धरति न चौकी नगजरी, यातें उर में ल्याइ।
छांह परे परपुरुष की, जिन तिय धर्म नसाइ।।

रसप्रबोध, छन्द–81

'रसलीन' ने स्वकीया के तीन भेद–मुग्धा, मध्या एवं प्रौढ़ा किए है।

2. परकीयाः नायिका भेद का दूसरा प्रकार परकीया है। परनायक के प्रति प्रेम रखने वाली नायिका परकीया कहलाती है। परकीया का उदाहरण देते हुए 'रसलीन' ने कहा है–

निज दुति देह दिखाई कै, हरै और के प्रान।
नेह चहति निसि दिनि रहै, सुंदरि दीप समान।।

– रसप्रबोध, छन्द–212

'रसलीन' ने परकीया के प्रथम भेद में ऊढ़ा एवं अनूढ़ा दो भेद किए है। इनके अतिरिक्त अन्य विभिन्न भेद भी परकीया के किए है।

3. सामान्याः धन के लिए प्रेम करने वाली नायिका सामान्या कहलाती है। 'रसलीन' ने सामान्या अथवा गणिका को धन से प्रेम करने वाला सिद्ध किया है। 'रसलीन' ने सामान्या का प्रभावी उदाहरण दिया है –

ल्याये पायल है भली, परी रहैगी पाइ।
लाल दीजिये माल जो, राखे हिय सो लाइ।।

–रसप्रबोध, छन्द–311

'रसलीन' ने सामान्या के चार भेद किए है

1. स्वतन्त्रा
2. जननी अधीना
3. नेमता सामान्या
4. प्रेम दुःखिता ।

इस प्रकार 'रसलीन' ने नायिका–भेद के अन्य भेद – अन्यसुरतिदुःखिता, गर्विता, एवं मानिनी किए है। इसके साथ ही 'रसलीन' ने अवस्था भेद से, गुणानुसार, जाति के अनुसार, लोकभेद के अनुसार नायिका भेद किया है।

निष्कर्ष

'रसलीन' का नायक–नायिका भेद सुव्यवस्थित एवं पूर्ण है। इन्होंने नायक–नायिका के नवीन भेद भी किए है, जिसमें इनकी मौलिकता दृष्टिगोचर होती है। 'रसलीन' ने प्रत्येक भेद एवं उपभेद के स्पष्ट लक्षण एवं उदाहरण दिए है। नायक–नायिका भेदों का 'रसलीन' के द्वारा विस्तार किया गया है, जिस पर कामशास्त्र का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है परन्तु 'रसलीन' के काव्य में कहीं भी अश्लीलता के दर्शन नहीं होते।

इस प्रकार 'रसलीन' के काव्य में नायक–नायिका भेद का सुव्यवस्थित वर्णन किया गया है, जिसमें मौलिकता का समावेश है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रसप्रबोध–सैयद गुलाम नबी 'रसलीन' ;सुखवीर दत्त शास्त्रीद्ध रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर, 1997
2. रसलीन ग्रन्थावली–;सुधाकर पाण्डेयद्ध, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सम्वत् 2026
3. नाट्यशास्त्र–;पं केदारनाथद्ध भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी, 1983
4. रसमंजरी–भानुदत्त–;गोपालशास्त्रीद्ध , श्रीकृष्ण निबन्ध–भवनम्, वाराणसी, संवत् 2035
5. कामसूत्र–वात्स्यायन–;डॉ रामानन्द शर्माद्ध, चौरखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, सन् 1997